स्कूल का वो दिन

आबिद सिद्दकी

बात उन दिनों की है जब मैं आठवीं में पढ़ता था। पचमढ़ी में। हमारी मण्डली शैतानी में अव्वल थी। एक बार की बात है। पचमढ़ी में राजीव गाँधी आने वाले थे। हवाई जहाज़ से। जब तक हमें यह खबर लगी हम स्कूल जाने के लिए तैयार हो चुके थे। पर स्कूल जाने का मन नहीं कर रहा था। हम सब सोच रहे थे कि क्यों न हवाई जहाज़ देखने चलें। हम चारों ने (सोना, कुंजीलाल, गया प्रसाद और मैं) तय किया कि आज स्कूल की जगह हवाई पट्टी चलते हैं। हम जानते थे कि सीधे रास्ते गए तो कोई भी जान-पहचान का आदमी मिल जाएगा। सोना ने सुझाया कि जंगल की पगडंडी से चलते हैं। हमें बात जँच गई। हम जंगल से होकर हवाई पट्टी की ओर बढ़ रहे थे। हम ऊँचाई पर थे और हवाई पट्टी नीचे के मैदान पर। थोड़ी ही देर में हवाई पट्टी नज़र आने लगी। हवाई जहाज़ आ चुका था। खूब चहल-पहल थी। हम धीरे-धीरे उतर रहे थे। स्कूल की ड्रेस पहने। जैसे-तैसे हम हवाई पट्टी के नज़दीक पहुँच गए।

हम पहली बार हवाई जहाज़ को इतने करीब से देख रहे थे। सभी की नज़र राजीव गाँधी पर थी इसलिए किसी ने हम पर ध्यान नहीं दिया। हमारी नज़र हवाई जहाज़ पर ही टिकी थी। उसका दरवाज़ा खुला हुआ था। अन्दर का नज़ारा साफ-साफ दिखाई दे रहा था। हमें तो जैसे सब कुछ मिल गया था।

आधे घण्टे बाद हमने लौटने का फैसला किया। फिर वही पगडंडी वाला जंगल का रास्ता पकड़ा। स्कूल की छुट्टी होने में अभी भी तीन घण्टे बाकी थे। यानी अभी हम घर नहीं जा सकते थे। भूख लगने लगी थी। हमने जंगल में ही खाना खाया। खाने के बाद हम सोच ही रहे थे कि क्या करें तभी हमारी नज़र सामने की बड़ी गोल चट्टान पर गई। यह चट्टान किनारे पर अटकी हुई लग रही थी। नीचे देखा तो एक बहुत गहरी खाई नज़र आई। हमें झट एक शैतानी सूझी। क्यों न धकेलकर इसे खाई में पटक दें! इतनी बड़ी चट्टान खाई में गिरेगी तो कितना मज़ा आएगा! तब तक हम खाई में पत्थर फेंककर देख भी चुके थे। धीरे-धीरे सब राज़ी हो गए। पहले मैंने अपना पूरा ज़ोर लगाया। पर चट्टान टस से मस न हुई। फिर हम चारों ने अपनी पूरी ताकत से उसे धकेला। इस बार वह थोड़ी हिली। हमें यकीन हो गया था कि हम उसे लुढ़का सकते हैं। हमने कई बार कोशिश की। आखिर में हम उसे लुढ़काने में कामयाब हो ही गए। उसके गिरते ही हम झट से पीछे हट गए। उसके लुढ़कने से इतनी तेज़ आवाज़ आ रही थी कि हम बयान नहीं कर सकते। आवाज़ से डरकर बन्दरों के झुण्ड इधर-उधर भागने लगे। तभी एक आदमी भागता हुआ हमारे पास आया और पूछने लगा कि आवाज़ किस चीज़ की थी। वह शायद वन विभाग का आदमी था। हमने उसे इतना ही कहा, "कोई चट्टान खिसकी है।" हम सबने नीचे देखा। आम और जामुन के

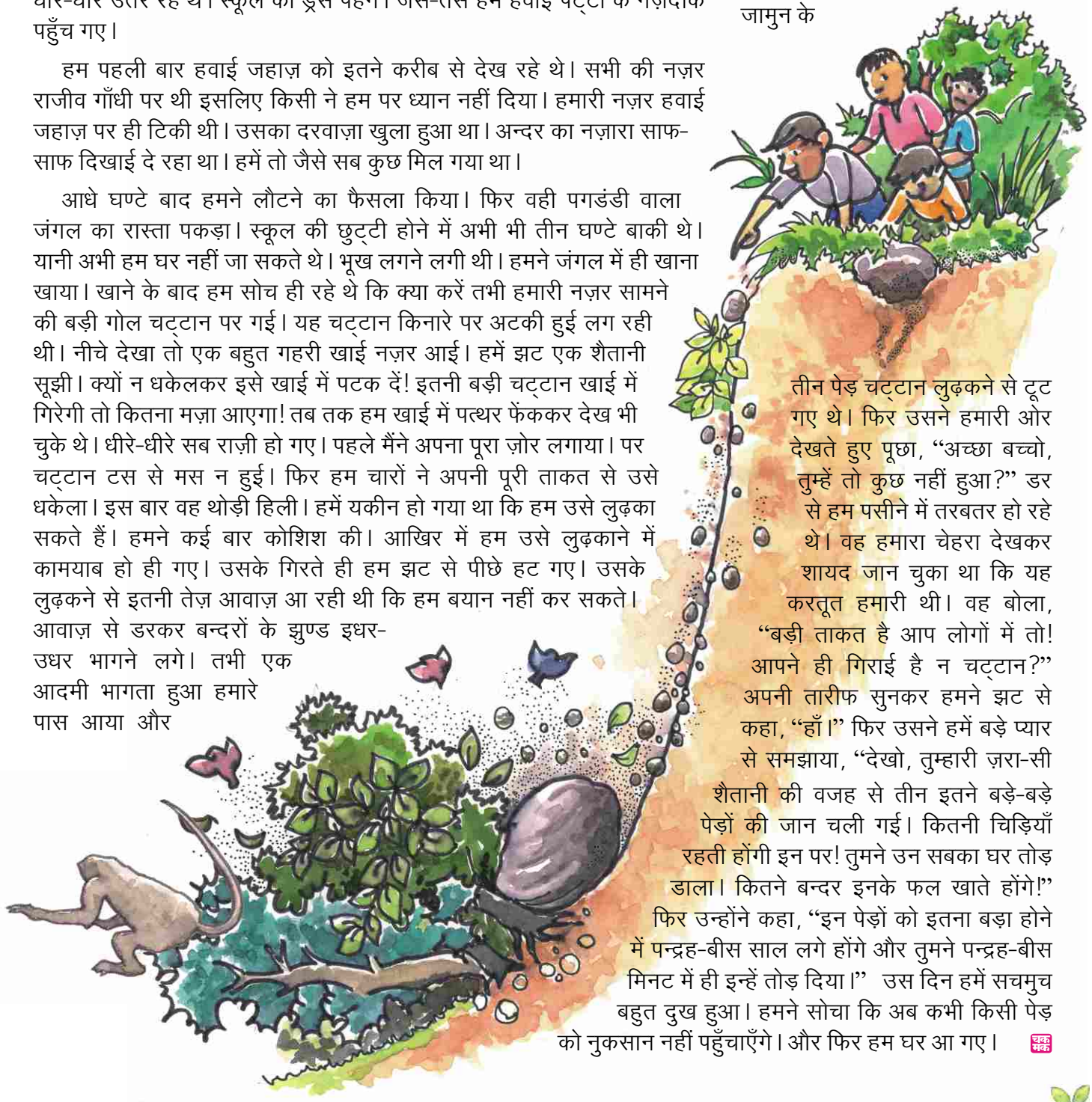

तीन पेड़ चट्टान लुढ़कने से टूट गए थे। फिर उसने हमारी ओर देखते हुए पूछा, "अच्छा बच्चो, तुम्हें तो कुछ नहीं हुआ?" डर से हम पसीने में तरबतर हो रहे थे। वह हमारा चेहरा देखकर शायद जान चुका था कि यह करतूत हमारी थी। वह बोला, "बड़ी ताकत है आप लोगों में तो! आपने ही गिराई है न चट्टान?" अपनी तारीफ सुनकर हमने झट से कहा, "हाँ।" फिर उसने हमें बड़े प्यार से समझाया, "देखो, तुम्हारी ज़रा-सी शैतानी की वजह से तीन इतने बड़े-बड़े पेड़ों की जान चली गई। कितनी चिड़ियाँ रहती होंगी इन पर! तुमने उन सबका घर तोड़ डाला। कितने बन्दर इनके फल खाते होंगे!" फिर उन्होंने कहा, "इन पेड़ों को इतना बड़ा होने में पन्द्रह-बीस साल लगे होंगे और तुमने पन्द्रह-बीस मिनट में ही इन्हें तोड़ दिया।" उस दिन हमें सचमुच बहुत दुख हुआ। हमने सोचा कि अब कभी किसी पेड़ को नुकसान नहीं पहुँचाएँगे। और फिर हम घर आ गए।